साहित्येतिहास–दर्शन

अतीत के तथ्यों का कालक्रमानुसार वर्णन–विश्लेषण इतिहास है।

इतिहास लेखन में तर्कपूर्ण शैली, गवेषणात्मक पद्धिति और वस्तुपरक दृष्टिकोण वैज्ञानिक रूप प्रदान करता है। साथ ही ललित शैली और आत्मपरक दृष्टिकोण कलात्मक रूप प्रदान करता है।

- **भारतीय दृष्टिकोण अध्यात्मवादी और आदर्श मूलक रहा है।**
- **पश्चात्यवादी दृष्टिकोण यथार्थवादी और वस्तुपरक रहा है।**

यूनानी विद्वान हिरोदोतस ने इतिहास के चार लक्षण बताए हैं –

1. इतिहास वैज्ञानिक विधा है, इसलिए इसकी पद्धति आलोचनात्मक होनी चाहिए।
2. यह मानविकी के अंतर्गत आता है, अतः यह मानव जाति से संबंधित है।
3. इसके तथ्य और निष्कर्ष प्रमाण पर आधारित होते हैं।
4. यह अतीत के आलोक में भविष्य पर प्रकाश डालता है।

साहित्येतिहास में साहित्यिक रचनाओं का अध्ययन ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में करते हैं। साहित्य के इतिहास को समझने के लिए तत्कालीन परिस्थितियों के अध्ययन के साथ–साथ रचनाकारों की परिस्थितियों और मनोभावों का अध्ययन भी जरूरी है। इतिहासकार अतीत को वर्तमान से जोड़ने का प्रयास करता है। वह अपनी प्रतिभा के बल पर बिखरे हुए तथ्यों में निहित संगति के सूत्र को खोज निकालता है।

मार्क्सवादी इतिहासकार द्वंद्वात्मक भौतिक विकासवाद, वर्ग संघर्ष और आर्थिक परिस्थितियों को सभी साहित्यिक प्रवृत्तियों के मूल में स्वीकार करते है, इसलिए उनका दृष्टिकोण एकांगी है। वहीं आई.ए. रिचर्डस ने काव्य के शैली पक्ष की व्याख्या मनोविज्ञान और अर्थविज्ञान के आधार पर की है। साहित्येतिहास के संबंध में कारलाइक ने कहा है ''किसी राष्ट्र के काव्य का इतिहास वहां के धर्म, राजनीति और विज्ञान के इतिहास का सार होता है। काव्य के इतिहास में लेखक को राष्ट्र के उच्चतम् लक्ष्य, उसकी क्रमागत दिशा और विकास को देखना अत्यंत आवश्यक है। इससे राष्ट्र का निर्माण होता है।''

साहित्येतिहास–दर्शन मूलतः साहित्येतिहास–लेखन में इतिहासकार के दृष्टिकोणों और विचाारों का अध्ययन करता है साहित्य के इतिहास–दर्शन के अंतर्गत निम्न तथ्यों को ध्यान में रखना चाहिए –

1. साहित्यकार की प्रतिभा और उनके व्यक्तित्व का अध्ययन।
2. युगीन चेतना का अध्ययन।
3. साहित्यिक एवं सांस्कृतिक परंपराओं का अध्ययन।
4. साहित्यकार की नैसर्गिक प्रतिभा एवं परम्परा का द्वंद्व और उसके स्रोत का अध्ययन।
5. साहित्यकार द्वारा अभीष्ट की प्राप्ति।

हिन्दी में साहित्येतिहास दर्शन पर पहली पुस्तक 'साहित्य का इतिहास दर्शन' नाम से नलिनविलोचन शर्मा लिखें। मैनेजर पांडेय का 'इतिहास एवं साहित्य दृष्टि' भी इसी श्रेणी में उल्लेखनीय ग्रंथ है।